وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِیْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ

और मैं अपने नफ्स की बराअत नहीं करता। यक़ीनन नफ्स तो बहोत ज़्यादा बुराई का हुक्म देने वाला है

اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیْ ؕ اِنَّ رَبِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۵۳﴾ وَقَالَ

मगर वो जिस पर मेरा रब रहम करे। यक़ीनन मेरा रब बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और बादशाह ने कहा के

الْمَلِكُ ائْتُوْنِیْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِیْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ

तुम उसे मेरे पास ले आओ, मैं उसे अपनी ज़ात के लिए खालिस रखना चाहता हूँ। फिर जब बादशाह ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

قَالَ اِنَّكَ الْیَوْمَ لَدَیْنَا مَكِیْنٌ اَمِیْنٌ ﴿۵۴﴾ قَالَ

से बात की तो बादशाह ने कहा के यक़ीनन आप आज से हमारे नज़दीक अमानतदार इ़ज़्ज़त के मरतबे पर हो। यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

اجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآىِٕنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۵﴾

ने फरमाया के आप मुझे ज़मीन के खज़ानों पर मुक़र्रर कर दीजिए। यक़ीनन मैं हिफाज़त करने वाला, जानने वाला हूँ।

وَ كَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِیُوْسُفَ فِی الْاَرْضِ ۚ یَتَبَوَّاُ مِنْهَا

और इसी तरह हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को उस मुल्क में हुकूमत दी। वो ठिकाना बनाते थे उस मुल्क में

حَیْثُ یَشَآءُ ؕ نُصِیْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِیْعُ

जहाँ चाहते। हमारी रहमत हम पहोंचाते हैं जिसे चाहते हैं और हम नेकी करने वालों का अज्र

اَجْرَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۶﴾ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ

ज़ायेअ नहीं करते। और अलबत्ता आखिरत का अज्र बेहतर है उन के लिए जो

اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿۵۷﴾ ع وَجَآءَ اِخْوَةُ یُوْسُفَ

ईमान वाले हैं और जो मुत्तक़ी हैं। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के भाई आए, फिर वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

فَدَخَلُوْا عَلَیْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۸﴾

के पास पहोंचे तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन को पेहचान लिया और वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को पेहचानते नहीं थे।

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِیْ بِاَخٍ لَّكُمْ

और जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन को उन का सामान तय्यार कर के दिया तो फरमाया के तुम मेरे पास अपने उस भाई को भी ले आओ

مِّنْ اَبِیْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّیْٓ اُوْفِی الْكَیْلَ وَ اَنَا

जो तुम्हारे बाप की तरफ से है। क्या तुम देखते नहीं के मैं अनाज पूरा पूरा देता हूँ और मैं

خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ﴿۵۹﴾ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِیْ بِهٖ فَلَا كَیْلَ لَكُمْ

बेहतरीन मेज़बानी करने वाला हूँ। फिर अगर तुम उस को मेरे पास नहीं लाओगे तो तुम्हें ग़ल्ला नहीं मिलेगा

عِنْدِیْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ

मेरे पास और तुम मेरे क़रीब भी मत आना। उन्हों ने कहा के हम उसे उस के अब्बा से इसरार के साथ

وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ

तलब करेंगे और यक़ीनन हम ऐसा करेंगे। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने खादिमों से फरमाया के तुम उन

فِیْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا

की पूंजी उन के सामान में रख दो ताके वो उस को पेहचान लें जब वो पलट कर जाएं

اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا

अपने घर वालों के पास ताके वापस आएं। फिर जब वो अपने अब्बा के पास वापस पहोंचे

اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ

तो उन्हों ने कहा के ऐ हमारे अब्बा! हम से ग़ल्ला रोक दिया गया, इस लिए हमारे साथ हमारे भाई

مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾ قَالَ

(बिनयामीन) को भेजिए के हम ग़ल्ला लाएं और हम यक़ीनन उस की हिफाज़त करेंगे। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के क्या

هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ

मैं तुम्हें उस के बारे में अमीन समझूं जैसा के मैं ने उस के भाई के बारे में इस से पेहले तुम्हें अमीन समझा था?

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾

फिर अल्लाह बेहतरीन हिफाज़त करने वाला है। और वो अरहमुर्राहिमीन है।

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ

और जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो अपनी पूंजी को पाया के जो उन की तरफ वापस लौटा दी गई थी।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِیْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ

उन्हों ने कहा हमारे अब्बा! हमें क्या चाहिए? ये हमारी पूंजी हमें वापस लौटा दी गई है।

وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَ نَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ

और हम अपने घर वालों का ग़ल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफाज़त करेंगे और हमें एक ऊँट का ग़ल्ला ज़्यादा मिलेगा।

ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ

ये ग़ल्ले (का हुसूल) आसान है। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं उस को तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेजूँगा

حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِیْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ

जब तक के तुम मुझे अल्लाह की तरफ से पुख्ता अहद न दो के तुम ज़रूर उसे मेरे पास लाओगे, मगर ये के

يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ

तुम्हें घेर लिया जाए। फिर जब उन्हों ने याक़ूब (अलैहिस्सलाम) को अपना पुख़्ता अहद दिया, तो याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝۶۶ وَ قَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا

अल्लाह उस पर वकील है जो हम केह रहे हैं। और याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे बेटो! तुम एक

مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ

दरवाज़े से दाखिल न होना और अलग अलग दरवाज़ों से दाखिल होना।

وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ

और मैं तुम्हें अल्लाह के हुक्म से कुछ भी बचा नहीं सकता। हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का

اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَ عَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝۶۷

चलता है। उसी पर मैं ने भरोसा किया। और उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए।

وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ

और जब वो दाखिल हुए उस तरह जैसे उन्हें उन के अब्बा ने हुक्म दिया था, तो ये बात

يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً

उन्हें अल्लाह के हुक्म से ज़रा भी बचा न सकी मगर एक ख्वाहिश थी याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के

فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ

दिल की जो उन्हों ने पूरी कर ली। और यक़ीनन वो इल्म वाले थे, उसी को जानते थे जो हम ने उन्हें सिखलाया था

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۶۸ وَلَمَّا دَخَلُوْا ع ۱۱ ۲

लेकिन अक्सर लोग (हक़ीक़त का) इल्म नहीं रखते। और जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास

عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا

दाखिल हुए तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने पास अपने भाई को जगह दी। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۶۹

यक़ीनन मैं तेरा भाई हूँ, इस लिए तू अफसोस मत कर उन हरकतों पर जो ये कर रहे हैं।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ

फिर जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन को उन का सामान तय्यार कर के दिया तो अपने भाई के थैले में

فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ

प्याला रख दिया, फिर एक ऐलान करने वाले ने ऐलान किया के ऐ क़ाफले वालो! यक़ीनन तुम

لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّا ذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾

तो चोर हो। ये केहते हुए वो उन के सामने आए के तुम क्या चीज़ गुम पाते हो?

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ

उन्हों ने कहा के हम बादशाह का प्याला गुम पाते हैं और उस शख्स के लिए जो उस को ले कर आएगा एक ऊँट का ग़ल्ला

بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ

मिलेगा और मैं उस का ज़िम्मेदार हूँ। उन्हों ने कहा के अल्लाह की क़सम! यक़ीनन तुम्हें मालूम है के

مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا

हम इस मुल्क में इस लिए नहीं आए के हम फसाद फैलाएं और हम चोर नहीं हैं। उन्हों ने कहा

فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ

के फिर उस शख्स की क्या सज़ा है अगर तुम झूठे हो? तो उन्हों ने कहा उस की सज़ा

مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ

वही शख्स है जिस के थैले में वो प्याला पाया जाए, फिर वही उस की सज़ा है। इसी तरह

نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ

हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। फिर यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन के थैलों से इब्तिदा की अपने भाई के

اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ

थैले से पेहले, फिर उस को निकाला अपने भाई के थैले से। इसी तरह

كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ

हम ने तदबीर की यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के लिए। वो अपने भाई को नहीं ले सकते थे बादशाह के

الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ

मज़हब में मगर ये के अल्लाह चाहे। हम दरजात बुलन्द करते हैं जिस के चाहते हैं।

وَ فَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ

और हर इल्म वाले से बढ़ कर इल्म वाला है। उन्हों ने कहा के अगर उस ने चोरी की

فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ

तो यक़ीनन इस से पेहले उस के भाई ने भी चोरी की थी। फिर यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने

فِىْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ

उस को अपने जी में छुपाया और उस को उन के सामने ज़ाहिर नहीं किया। (दिल में) कहा तुम बुरी

مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا

जगह में हो। और अल्लाह खूब जानता है उस को जो तुम बयान कर रहे हो। उन्हों ने कहा के ऐ

الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا

अज़ीज़े मिस्र! यक़ीनन इस के बहोत बूढ़े अब्बा हैं, इस लिए आप हम में से किसी एक को उस की जगह पर

مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ قَالَ مَعَاذَ

रख लीजिए। यक़ीनन हम आप को एहसान करने वालों में से देख रहे हैं। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने

اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ

फरमाया के अल्लाह की पनाह है इस से के हम लें मगर उसी शख्स को जिस के पास हम ने अपने सामान को पाया।

ع ٩ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْئَسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا

यक़ीनन तब तो हम ज़ालिम होंगे। फिर जब वो उन से मायूस हो गए तो अलग हो कर उन्हों ने तन्हाई में

نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ

सरगोशी की। उन में से बड़े ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं के तुम्हारे अब्बा ने

قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ

तुम से अल्लाह का पुख्ता अहद लिया है और तुम्हें मालूम नहीं इस से पेहले वो कोताही (ज़्यादती)

مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ

जो तुम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के बारे में की? मैं अब हरगिज़ इस ज़मीन से नहीं टलूँगा

حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ

जब तक के मेरे अब्बा मुझे इजाज़त न दें या अल्लाह मेरा फैसला कर दें। और वो बेहतरीन

الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ

फेसला करने वाला है। तुम अपने अब्बा के पास वापस जाओ, फिर कहो ऐ हमारे अब्बा!

اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا

यक़ीनन आप के बेटे ने चोरी की। और हम ने गवाही नहीं दी थी मगर उसी के मुताबिक़ जो हमें मालूम था

وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ

और हम ग़ैब को जानने वाले नहीं थे। और आप उस बस्ती वालों से पूछ लीजिए

كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَاِنَّا

जिस में हम थे और उन क़ाफले वालों से भी जिस में शामिल हो कर हम आए हैं। और यक़ीनन हम

لَصٰدِقُوْنَ ﴿٧٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ

सच्चे हैं। याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के बल्के तुम्हारे लिए तुम्हारे नफ्सों ने एक मुआमले को मुज़य्यन किया है।

فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ

अब तो सब्र ही बेहतर है। उम्मीद है के अल्लाह मेरे पास उन को इकट्ठा ले आए।

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَ تَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ

यक़ीनन वो इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने उन की तरफ से मुंह फेरा और कहा

يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ

हाए अफसोस यूसुफ पर! इस हाल में के उन की आँखें ग़म की वजह से सफेद हो चुकी थीं,

فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ

फिर वो बमुशकिल ग़म को ज़ब्त कर रहे थे। उन्हों ने कहा अल्लाह की क़सम! आप तो यूसुफ को याद करते रहोगे

حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

यहां तक के क़रीबुल मौत हो जाओ या हलाक होने वालों में से हो जाओगे।

قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَ اَعْلَمُ

याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं तो फरयाद करता हूँ अपनी बेक़रारी और अपने ग़म की सिर्फ अल्लाह से और

مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا

मैं जानता हूँ अल्लाह की तरफ से वो बातें जो तुम जानते नहीं हो। ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ, फिर तुम तहक़ीक़ करो

مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ

यूसुफ और उस के भाई के मुतअल्लिक़ और तुम मायूस मत हो अल्लाह की रहमत से। यक़ीनन अल्लाह

لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफिर लोग।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا

फिर जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास पहोंचे तो कहा के ऐ अज़ीज़े मिस्र! हमें और हमारे घर वालों को

الضُّرُّ وَ جِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ

क़हतसाली पहोंची है और हम नाक़िस पूंजी ले कर आए हैं, इस लिए आप हमारे लिए ग़ल्ला पूरा पूरा दे दीजिए

وَ تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾

और हमें मज़ीद भी दीजिए। यक़ीनन अल्लाह सदक़ा करने वालों को बदला देंगे।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम्हें मालूम है वो हरकत जो तुम ने यूसुफ और उन के भाई के साथ की

جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾ قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا

जब के तुम जाहिल थे? उन्हों ने कहा के क्या आप ही यूसुफ हो? यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं ही

يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ز قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ

यूसुफ हूँ और ये मेरा भाई है। यक़ीनन अल्लाह ने हम पर एहसान फरमाया। यक़ीनन जो भी

يَّتَّقِ وَ يَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾

तक़वा इख्तियार करता है और सब्र करता है तो यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं करते।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿٩١﴾

उन्हों ने कहा के अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने आप को हम पर तरजीह दी और यक़ीनन हम क़ुसूरवार हैं।

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ز

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के आज तुम पर कोई गिरिफ्त नहीं है। अल्लाह तुम्हें मुआफ करे।

وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا

और वो रहम करने वालों में सब से बेहतरीन रहम करने वाला है। तुम मेरे कुरते को ले कर जाओ,

فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ

फिर उस को मेरे अब्बा के चेहरे पर डाल दो, तो वो बीना हो जाएंगे। और तुम अपने तमाम घर वालों को

اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ ع ١٤

मेरे पास ले आओ। और जब ये काफ़ला मिस्र से चला तो उन के अब्बा ने कहा के

اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾

मैं यूसुफ की खुशबू पा रहा हूँ, अगर तुम मुझ में बुढ़ापे की अक़्ल की कमी का शुबह न करो।

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّآ ع ١٥

उन्हों ने कहा के अल्लाह की क़सम! आप तो बदस्तूर अपनी पुरानी ग़लतफहमी में हो। फिर जब

اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ

बशारत देने वाला आया तो कुरते को आप के चेहरे पर डाल दिया, तो आप बीना हो गए।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا

याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था के मैं अल्लाह की तरफ से जानता हूँ वो जो तुम

تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا

जानते नहीं हो। उन्हों ने कहा के ऐ हमारे अब्बा! आप हमारे लिए हमारे गुनाहों की मग़फिरत तलब कीजिए, यक़ीनन हम

خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

क़ुसूरवार हैं। याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अनक़रीब मैं तुम्हारे लिए अपने रब से इस्तिग़फार करूंगा। यक़ीनन वो

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। फिर जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास पहोंचे, तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَ قَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ

ने अपने पास अपने वालिदैन को जगह दी और कहा के तुम मिस्र में अमन से दाखिल हो जाओ अगर अल्लाह

اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ

ने चाहा। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने वालिदैन को तख़्त पर बुलन्द जगह बिठाया और सब लोग यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के

سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ

सामने सज्दे में गिर गए। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने कहा के ऐ मेरे अब्बा! ये मेरे इस से पेहले वाले

مِنْ قَبْلُ ز قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ

ख़्वाब की ताबीर है। यक़ीनन मेरे रब ने उसे सच कर दिखलाया। और उस ने मेरे साथ एहसान किया

اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ

जब के मुझे जेलखाने से निकाला और तुम्हें देहात से ले आया

مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَ بَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ

इस के बाद के शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान झगड़ा डाला था।

اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾

यक़ीनन मेरा रब बारीक तदबीर करने वाला है जिस काम के लिए चाहता है। यक़ीनन वो इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ

ऐ मेरे रब! यक़ीनन तू ने मुझे सलतनत अता की और तू ने मुझे

مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قف

ख़्वाबों की ताबीर का इल्म दिया। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले!

اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا

तू ही मेरा दुन्या और आखिरत में कारसाज़ है। तू मुझे मुसलमान होने की हालत में वफात दे

وَّ اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ

और मुझे सुलहा के साथ मिला दे। ये ग़ैब की खबरों में से है जिस को हम

نُوْحِیْهِ اِلَیْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْۤا اَمْرَهُمْ

आप की तरफ वही कर रहे हैं। और आप उन के पास मौजूद नहीं थे जब उन्हों ने अपने मुआमले पर इत्तिफाक़ किया

وَهُمْ یَمْكُرُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَمَاۤ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ

इस हाल में के वो मक्र कर रहे थे। और लोगों में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं अगर्चे आप

بِمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ؕ

कितने ही हरीस हों। हालांके आप उन से इस पर किसी अज्र का सवाल नहीं करते।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَكَاَیِّنْ مِّنْ اٰیَةٍ ع ۱۳

ये तो सिर्फ तमाम जहान वालों के लिए नसीहत है। और बहोत सी निशानियाँ हैं

فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ یَمُرُّوْنَ عَلَیْهَا وَهُمْ عَنْهَا

ज़मीन और आसमानों में जिन पर वो गुज़रते हैं इस हाल में के वो उस से

مُعْرِضُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَمَا یُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ

मुंह मोड़ते हैं। और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं रखते मगर इस तरह के वो

مُّشْرِكُوْنَ ﴿۱۰۶﴾ اَفَاَمِنُوْۤا اَنْ تَاْتِیَهُمْ غَاشِیَةٌ

शिर्क भी करते जाते हैं। क्या फिर वो इस से मामून हैं के उन के पास अल्लाह के अज़ाब में से

مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِیَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ

ढांपने वाला अज़ाब आ जाए या उन के पास क़यामत अचानक आ जाए इस हाल में के उन्हें

لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ قُلْ هٰذِهٖ سَبِیْلِیْۤ اَدْعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ ۫

पता न हो? आप फरमा दीजिए ये मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ बसीरत के साथ

عَلٰى بَصِیْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِیْ ؕ وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

दावत देता हूँ, मैं भी और वो भी जिन्हों ने मेरा इत्तिबा किया। और अल्लाह पाक है

وَمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۰۸﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ

और मैं मुशरिकीन में से नहीं हूँ। और हम ने आप से पेहले रसूल नहीं भेजे

اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیْۤ اِلَیْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰی ؕ اَفَلَمْ یَسِیْرُوْا

मगर मर्दों को बस्तियों वालों में से जिन की तरफ हम वही भेजते थे। क्या फिर वो ज़मीन

فِي الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ

में चले फिरे नहीं के देखते के उन का अन्जाम कैसा हुवा जो

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ وَلَدَارُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا ؕ

उन से पेहले थे। और अलबत्ता आखिरत का घर बेहतर है उन के लिए जो मुत्तक़ी हैं।

اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۰۹﴾ حَتّٰۤى اِذَا اسۡتَيۡـَٔسَ الرُّسُلُ

क्या फिर तुम्हें अक़्ल नहीं? यहां तक के जब पैग़म्बर मायूस हो गए

وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ قَدۡ كُذِبُوۡا جَآءَهُمۡ نَصۡرُنَا ۙ فَنُجِّىَ

और उन्हों ने गुमान किया के उन्हें झुठलाया गया तो उन के पास हमारी नुसरत आ गई, फिर उन्हें नजात दे दी गई

مَنۡ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاۡسُنَا عَنِ الۡقَوۡمِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿۱۱۰﴾

जिन्हें हम ने चाहा। और हमारा अज़ाब लौटाया नहीं जाता मुजरिम क़ौम से।

لَقَدۡ كَانَ فِىۡ قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٌ لِّاُولِى الۡاَلۡبَابِ ؕ

यक़ीनन उन के क़िस्सों में अक़्ल वालों के लिए इबरत है।

مَا كَانَ حَدِيۡثًا يُّفۡتَرٰى وَلٰكِنۡ تَصۡدِيۡقَ الَّذِىۡ

ये कोई ऐसी बात नहीं है जिस को घड़ लिया जाए, लेकिन उन किताबों की तस्दीक़ है जो

بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَ تَفۡصِيۡلَ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُدًى

इस से पेहले थीं और हर चीज़ की तफसील है और हिदायत

وَّ رَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾ ع ١٢ ٦

और रहमत है ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाए।

اٰيَاتُهَا ٤٣ (١٣) سُوۡرَةُ الرَّعۡدِ مَدَنِيَّةٌ (٩٦) رُكُوۡعَاتُهَا ٦

और ६ रूकूअ हैं सूरह रअद मदीना में नाज़िल हुई उस में ४३ आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ ؕ وَالَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ

अलिफ लाम मीम रॉ। ये इस किताब की आयतें हैं। और जो कुरआन आप की तरफ आप के रब की तरफ से

مِنۡ رَّبِّكَ الۡحَـقُّ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱﴾

उतारा गया वो हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

اَللّٰهُ الَّذِیۡ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیۡرِ عَمَدٍ تَرَوۡنَهَا

अल्लाह ही है जिस ने आसमानों को बुलन्द किया ऐसे सुतून के बग़ैर जिस को तुम देखो,

ثُمَّ اسۡتَوٰی عَلَی الۡعَرۡشِ وَ سَخَّرَ الشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ

फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा और उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है।

كُلٌّ یَّجۡرِیۡ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ یُفَصِّلُ

सब के सब चलते रहेंगे मुक़र्ररा वक्त तक के लिए। वो तमाम उमूर की तदबीर करता है, आयात को तफसील

الۡاٰیٰتِ لَعَلَّكُمۡ بِلِقَآءِ رَبِّكُمۡ تُوۡقِنُوۡنَ ۲ وَهُوَ الَّذِیۡ

से बयान करता है ताके तुम अपने रब की मुलाक़ात पर यक़ीन रखो। और वही अल्लाह है जिस ने

مَدَّ الۡاَرۡضَ وَجَعَلَ فِیۡهَا رَوَاسِیَ وَاَنۡهٰرًا ؕ

ज़मीन को फैलाया और उस में पहाड़ रख दिए और नेहरों को बनाया।

وَمِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیۡهَا زَوۡجَیۡنِ اثۡنَیۡنِ یُغۡشِی

और तमाम फलों के उस ने ज़मीन में जोड़े (नर और मादा) बनाए, वो रात को दिन पर

الَّیۡلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّتَفَكَّرُوۡنَ ۳

ढांपता है। यक़ीनन उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है।

وَفِی الۡاَرۡضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنۡ اَعۡنَابٍ

और ज़मीन में मिले जुले टुकड़े हैं और अंगूर के बाग़ात हैं और खेतियाँ हैं और खजूर के बाग़ात हैं, कुछ

وَّزَرۡعٌ وَّ نَخِیۡلٌ صِنۡوَانٌ وَّ غَیۡرُ صِنۡوَانٍ یُّسۡقٰی بِمَآءٍ

शाखों वाले होते हैं और कुछ शाखों वाले नहीं होते, हालांके एक ही पानी से उन्हें सैराब किया

وَّاحِدٍ ۫ وَ نُفَضِّلُ بَعۡضَهَا عَلٰی بَعۡضٍ فِی الۡاُكُلِ ؕ

जाता है। और हम उन में से एक को दूसरे से बढ़ा देते हैं मज़ों में।

اِنَّ فِیۡ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ ۴ وَاِنۡ تَعۡجَبۡ

यक़ीनन इस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती है। और अगर आप तअज्जुब करें

فَعَجَبٌ قَوۡلُهُمۡ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِیۡ خَلۡقٍ

तो उन की ये बात क़ाबिले तअज्जुब है के क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम अज़ सरे नौ ज़िन्दा किए

جَدِیۡدٍ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا بِرَبِّهِمۡ ۚ وَاُولٰٓئِكَ

जाएंगे? उन्हों ने अपने रब के साथ कुफ्र किया। और उन की

الۡاَغۡلٰلُ فِيۡۤ اَعۡنَاقِهِمۡ‌ۚ وَ اُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ‌ۚ
गरदनों में तौक़ होंगे। और यही लोग दोज़खी हैं।
هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ۞ ٥ وَ يَسۡتَعۡجِلُوۡنَكَ بِالسَّيِّئَةِ
वो उस में हमेशा रहेंगे। और ये आप से बुराई को जल्दी तलब कर रहे हैं
قَبۡلَ الۡحَسَنَةِ وَقَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهِمُ الۡمَثُلٰتُ‌ؕ
भलाई से पेहले, हालांके उन से पेहले भी अज़ाब गुज़र चुके हैं।
وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوۡ مَغۡفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلۡمِهِمۡ‌ۚ
और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता इन्सानों की उन के ज़ुल्म के बावजूद मग़फिरत करने वाला है।
وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيۡدُ الۡعِقَابِ ۞ ٦ وَ يَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ
और यक़ीनन तेरा रब सख्त सज़ा देने वाला है। और काफिरों ने
كَفَرُوۡا لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡهِ اٰيَةٌ مِّنۡ رَّبِّهٖ‌ؕ اِنَّمَاۤ
कहा के इस नबी पर उस के रब की तरफ से कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं उतारा गया? आप तो सिर्फ
اَنۡتَ مُنۡذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوۡمٍ هَادٍ ۞ ٧ اَللّٰهُ يَعۡلَمُ
डराने वाले हैं और हर क़ौम के लिए एक हादी होता है। अल्लाह जानता है
مَا تَحۡمِلُ كُلُّ اُنۡثٰى وَمَا تَغِيۡضُ الۡاَرۡحَامُ وَمَا تَزۡدَادُ‌ؕ
उसे जो हर मादा हामिला होती है और उसे भी जिसे बच्चादानियाँ खुश्क कर देती हैं और उसे भी जो बढ़ाती हैं।
وَكُلُّ شَىۡءٍ عِنۡدَهٗ بِمِقۡدَارٍ ۞ ٨ عٰلِمُ الۡغَيۡبِ
और हर चीज़ अल्लाह के पास एक मिक़दार के साथ है। वो पोशीदा और ज़ाहिर का जानने
وَ الشَّهَادَةِ الۡكَبِيۡرُ الۡمُتَعَالِ ۞ ٩ سَوَآءٌ مِّنۡكُمۡ مَّنۡ اَسَرَّ
वाला है, बड़ा है, बरतर है। तुम में से बराबर हैं वो सब जो बात को चुपके से
الۡقَوۡلَ وَمَنۡ جَهَرَ بِهٖ وَمَنۡ هُوَ مُسۡتَخۡفٍ ۢ بِالَّيۡلِ
कहें और जो ज़ोर से कहें और जो रात में छुपना चाहें
وَسَارِبٌ ۢ بِالنَّهَارِ ۞ ١٠ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ
और जो दिन में खुल्लम खुल्ला चलने वाले हों। इन्सान के लिए बारी बारी आने जाने वाले फरिश्ते हैं
وَمِنۡ خَلۡفِهٖ يَحۡفَظُوۡنَهٗ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ
उस के आगे से और उस के पीछे से जो उस की हिफाज़त करते हैं अल्लाह के अम्र से। यक़ीनन अल्लाह

ع ٧

لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوۡمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِهِمۡ ؕ

बदलता नहीं उस हालत को जो किसी क़ौम के साथ है यहां तक के वो खुद न बदलें उस को जो उन के अन्दरून में है।

وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوۡمٍ سُوۡٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمۡ

और जब अल्लाह किसी क़ौम के साथ बुराई का इरादा करते हैं तो उसे लौटाया नहीं जा सकता। और उन के लिए

مِّنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ وَّالٍ ۞ هُوَ الَّذِىۡ يُرِيۡكُمُ الۡبَرۡقَ خَوۡفًا

अल्लाह के सिवा कोई बचाने वाला नहीं। वही अल्लाह तुम्हें बिजली दिखाता है खौफ

وَّ طَمَعًا وَّ يُنۡشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۞ وَ يُسَبِّحُ الرَّعۡدُ

और लालच के लिए और वो भारी बादलों को उठाता है। और रअद फरिशता अल्लाह की हम्द के साथ

بِحَمۡدِهٖ وَالۡمَلٰٓئِكَةُ مِنۡ خِيۡفَتِهٖ ۚ وَيُرۡسِلُ

तस्बीह पढ़ता है, और फरिशते भी तस्बीह पढ़ते हैं अल्लाह के खौफ से। और अल्लाह

الصَّوَاعِقَ فَيُصِيۡبُ بِهَا مَنۡ يَّشَآءُ وَهُمۡ يُجَادِلُوۡنَ

बिजलियों को भेजता है, फिर उसे पहोंचाता है जिस पर चाहता है इस हाल में के वो अल्लाह के बारे में

فِى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيۡدُ الۡمِحَالِ ۞ لَهٗ دَعۡوَةُ الۡحَقِّ ؕ

झगड़ रहे होते हैं। और वो मज़बूत तदबीर वाला है। उसी के लिए हक़ की पुकार है।

وَالَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ لَا يَسۡتَجِيۡبُوۡنَ لَهُمۡ

और जिन को अल्लाह के अलावा ये पुकारते हैं वो उन की किसी पुकार का जवाब नहीं दे

بِشَىۡءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيۡهِ اِلَى الۡمَآءِ لِيَبۡلُغَ فَاهُ

सकते मगर अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाने वाले की तरह, ताके वो पानी उस के मुंह में पहोंच जाए,

وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الۡكٰفِرِيۡنَ اِلَّا فِىۡ ضَلٰلٍ ۞

हालांके वो उस के मुंह में पहोंचने वाला नहीं है। और काफिरों की पुकार जो भी है वो सिर्फ गुमराही है।

وَلِلّٰهِ يَسۡجُدُ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّكَرۡهًا

और अल्लाह को सज्दा करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं खुशी से और ज़बर्दस्ती

وَّظِلٰلُهُمۡ بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ ۩ ۞ قُلۡ مَنۡ رَّبُّ السجدة

और उन के साए भी, सुब्ह और शाम के वक़्त में। आप पूछिए के आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلۡ اَفَاتَّخَذۡتُمۡ مِّنۡ

और ज़मीन का रब कौन है? आप फरमा दीजिए के अल्लाह। आप कहिए क्या तुम ने अल्लाह के सिवा

دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ

ऐसे हिमायती बना लिए हैं जो अपने लिए किसी नफे और नुक़सान के मालिक नहीं हैं?

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي

आप पूछिए क्या अन्धा और बीना बराबर हो सकते हैं? या क्या तारीकियाँ

الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا

और नूर बराबर हो सकते हैं? या उन्हों ने अल्लाह के जो शुरका बनाए हैं उन्हों ने कोई चीज़ पैदा की है

كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ

अल्लाह के मखलूक़ पैदा करने की तरह के फिर उन कुफ्फार पर मखलूक़ मुश्तबह हो गई है? आप फरमा दीजिए के अल्लाह हर

كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝١٦ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

चीज़ को पैदा करने वाला है और वो यकता है, ग़ालिब है। उस ने आसमान से पानी

مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌ ۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ

उतारा, फिर वादियाँ अपनी (वुस्अते) मिक़दार के ऐतेबार से बेह पड़ीं, फिर सैलाब उभरे हुए

زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ

झाग को उठा कर लाता है। और उन चीज़ों का भी उसी जैसा झाग होता है जिसे ये

ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ

ज़ेवर या सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं। इस तरह अल्लाह

اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ

हक़ और बातिल की मिसालें बयान करता है। फिर अलबत्ता झाग तो खुश्क हो कर खत्म हो जाता है।

وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ

और अलबत्ता जो चीज़ इन्सानों को नफा देती है वो ज़मीन में ठेहेर जाती है। इसी तरह

يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۝١٧ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ

अल्लाह मिसालें बयान करते हैं। उन लोगों के लिए जिन्हों ने अपने रब का केहना माना

الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

उन के लिए भलाई है। और जिन्हों ने अपने रब का केहना नहीं माना अगर उन की मिल्क बन जाएं वो तमाम चीज़ें जो ज़मीन

مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ

में हैं सारी की सारी और उस के जैसी उस के साथ और भी हो जाएं तो भी यक़ीनन वो उस को फिदये में दे देंगे।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ
उन के लिए बदतरीन हिसाब होगा और उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

ع ٢/٨ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
और वो बुरी आराम की जगह है। क्या फिर वो शख़्स जो ये जानता है के जो आप की तरफ आप के रब की

مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
तरफ से उतारा गया वो हक़ है वो उस शख़्स की तरह हो सकता है जो अन्धा है? नसीहत तो सिर्फ

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٩﴾ ۙ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ
अक़्ल वाले ही हासिल करते हैं। वो लोग जो अल्लाह के अहद को पूरा करें

وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿٢٠﴾ ۙ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ
और पुख़्ता अहद न तोड़ें। और जो जोड़ें उन तअल्लुक़ात को जिन के जोड़े रखने का

بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ يَخَافُوْنَ سُوْٓءَ
अल्लाह ने हुक्म दिया और जो अपने रब से डरें और जो हिसाब की सख्ती

الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ ؕ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا
से डरें। और वो लोग जिन्हों ने सब्र किया अपने रब की रज़ा तलब करने के लिए और जिन्हों ने नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً
क़ाइम की और खर्च किया उन चीज़ों में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दी चुपके और अलानिया

وَّ يَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى
और जो भलाई के ज़रिए बुराई को दफा करते हैं, उन के लिए पिछला (आखिरत का)

الدَّارِ ﴿٢٢﴾ ۙ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ
घर है। जो जन्नाते अद्न हैं जिन में वो दाखिल होंगे, वो भी और वो लोग भी जो लाइक़ होंगे

مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ
उन के आबा व अजदाद में से और उन की बीवियों में से और उन की औलाद में से और फरिश्ते उन पर

عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ ۚ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ
हर दरवाज़े से दाखिल होते होंगे। (कहेंगे) अस्सलामु अलैकुम,(तुम पर सलामती हो) उस सब्र के बदले में जो तुम ने

عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ ؕ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ
किया, फिर ये आखिरत का घर कितना अच्छा है। और जो अल्लाह के अहद को तोड़ते हैं उस के पुख़्ता करने

مِيْثَاقِهٖ وَ يَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ

के बाद और उन तअल्लुक़ात को तोड़ते हैं जिन के जोड़े रखने का अल्लाह ने हुक्म दिया

وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ

और जो ज़मीन में फसाद फैलाते हैं, उन के लिए लानत है और उन के लिए मुसीबत का

سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ

घर है। अल्लाह रोज़ी कुशादा करते हैं जिस के लिए चाहते हैं और तंग करते हैं जिस के लिए चाहते हैं।

وَ فَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

और ये लोग दुन्यवी ज़िन्दगी पर खुश हैं। और दुन्यवी ज़िन्दगी आखिरत के

فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ٣ع٨ ٩

मुक़ाबले में नहीं है मगर थोड़ा सा फाइदा उठाना। और काफिर लोग केहते हैं के

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ

इस नबी पर उस के रब की तरफ से कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं उतारा गया? आप फरमा दीजिए के यक़ीनन अल्लाह गुमराह करते हैं

يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿٢٧﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जिसे चाहते हैं और हिदायत देते हैं अपनी तरफ उसे जो मुतवज्जेह होता है। वो लोग जो ईमान लाए

وَ تَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ

और जिन के दिल अल्लाह की याद से मुतमइन हैं। सुनो! अल्लाह की याद ही से

تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

दिल इतमिनान पाते हैं। वो लोग जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे

طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ

उन के लिए तूबा है और अच्छा अन्जाम है। इसी तरह हम ने आप को रसूल बना कर भेजा

فِىْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ

उस उम्मत में जिस से पेहले बहोत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताके आप उन पर तिलावत करें

الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ

वो जो हम ने आप की तरफ वही की, और ये रहमान के साथ कुफ्र कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए के

هُوَ رَبِّىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ

वो मेरा रब है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया और उसी की तरफ

مَتَابِ ﴿٣٠﴾ وَلَوۡ اَنَّ قُرۡاٰنًا سُيِّرَتۡ بِهِ الۡجِبَالُ

मेरा लौटना है। और अगर क़ुरआन ऐसा होता के जिस के ज़रिए पहाड़ों को चलाया जाता

اَوۡ قُطِّعَتۡ بِهِ الۡاَرۡضُ اَوۡ كُلِّمَ بِهِ الۡمَوۡتٰى ؕ بَلۡ لِّلّٰهِ

या उस के ज़रिए ज़मीन को काटा जाता, या उस के ज़रिए मुर्दों से बुलवाया जाता (तब भी ये ईमान न लाते)। बल्के अल्लाह ही

الۡاَمۡرُ جَمِيۡعًا ؕ اَفَلَمۡ يَايۡـَٔسِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ

के लिए तमाम उमूर हैं। क्या फिर वो लोग जो ईमान लाए हैं इस से मायूस नहीं हुए के

لَّوۡ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيۡعًا ؕ وَلَا يَزَالُ

अगर अल्लाह चाहता तो तमाम इन्सानों को हिदायत दे देता। और काफिरों को उन

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا تُصِيۡبُهُمۡ بِمَا صَنَعُوۡا قَارِعَةٌ اَوۡ تَحُلُّ

हरकतों की वजह से जो उन्हों ने की हैं बराबर मुसीबत पहोंचती रहेगी या उन के घर के क़रीब में

قَرِيۡبًا مِّنۡ دَارِهِمۡ حَتّٰى يَاۡتِىَ وَعۡدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

उतरती रहेगी यहाँ तक के अल्लाह का वादा आ पहोंचे। यक़ीनन अल्लाह

لَا يُخۡلِفُ الۡمِيۡعَادَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اسۡتُهۡزِئَ بِرُسُلٍ ع ١٤

वादे के खिलाफ नहीं करेंगे। यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बरों के साथ भी

مِّنۡ قَبۡلِكَ فَاَمۡلَيۡتُ لِلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ثُمَّ اَخَذۡتُهُمۡ ۫ فَ

इस्तिहज़ा किया गया, फिर मैं ने काफिरों को ढील दी, फिर मैं ने उन को पकड़ा।

كَيۡفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾ اَفَمَنۡ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفۡسٍۢ

फिर मेरा अज़ाब कैसा रहा? क्या फिर वो ज़ात जो हर शख़्स पर निगराँ है उन आमाल की जो उस ने किए (वो ज़ात और शुरका

بِمَا كَسَبَتۡ ۚ وَ جَعَلُوۡا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلۡ سَمُّوۡهُمۡ ؕ

बराबर हैं? नहीं!) उन्हों ने अल्लाह के लिए शुरका बना लिए हैं। आप पूछिए के तुम उन के नाम बतलाओ।

اَمۡ تُنَبِّـُٔوۡنَهٗ بِمَا لَا يَعۡلَمُ فِى الۡاَرۡضِ اَمۡ بِظَاهِرٍ

क्या तुम अल्लाह को खबर देते हो ऐसी चीज़ की जिस को वो ज़मीन में नहीं जानता या बातों में से

مِّنَ الۡقَوۡلِ ؕ بَلۡ زُيِّنَ لِلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مَكۡرُهُمۡ وَصُدُّوۡا

सरसरी बात तुम करते हो? बल्के काफिरों के लिए उन का मक्र मुज़य्यन किया गया और उन्हें

عَنِ السَّبِيۡلِ ؕ وَمَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ هَادٍ ﴿٣٣﴾

रास्ते से रोका गया। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

لَهُمۡ عَذَابٌ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَ لَعَذَابُ الۡاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ
उन के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में अज़ाब है और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब ज़्यादा मशक़्क़त वाला है।

وَمَا لَهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ وَّاقٍ ۝۳۴ مَثَلُ الۡجَنَّةِ الَّتِىۡ
और उन के लिए अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं। उस जन्नत का हाल जिस का

وُعِدَ الۡمُتَّقُوۡنَ ؕ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ اُكُلُهَا
मुत्तक़ियों से वादा किया गया है, ये है के उस के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। उस के मज़े

دَآئِمٌ وَّ ظِلُّهَا ؕ تِلۡكَ عُقۡبَى الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا ۖ وَّعُقۡبَى
दाइमी होंगे और उस के साए (भी दाइमी होंगे)। ये मुत्तक़ियों का अन्जाम है। और काफिरों

الۡكٰفِرِيۡنَ النَّارُ ۝۳۵ وَالَّذِيۡنَ اٰتَيۡنٰهُمُ الۡكِتٰبَ يَفۡرَحُوۡنَ
का अन्जाम दोज़ख है। और वो लोग जिन को हम ने किताब दी वो खुश हैं

بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ وَمِنَ الۡاَحۡزَابِ مَنۡ يُّنۡكِرُ بَعۡضَهٗ ؕ
उस की वजह से जो आप की तरफ उतारा गया है और गिरोहों में से बाज़ इस कुरआन के बाज़ हिस्से का इन्कार करते हैं।

قُلۡ اِنَّمَاۤ اُمِرۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ اللّٰهَ وَلَاۤ اُشۡرِكَ بِهٖ ؕ
आप फरमा दीजिए के मुझे तो सिर्फ ये हुक्म दिया गया है के मैं अल्लाह की इबादत करूँ और मैं उस के साथ शरीक न ठेहराऊँ।

اِلَيۡهِ اَدۡعُوۡا وَاِلَيۡهِ مَاٰبِ ۝۳۶ وَ كَذٰلِكَ اَنۡزَلۡنٰهُ
उसी की तरफ मैं दावत देता हूँ और उसी की तरफ मुझे वापस जाना है। और इसी तरह हम ने इस को अरबी वाला हक़ और

حُكۡمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعۡتَ اَهۡوَآءَهُمۡ بَعۡدَ
बातिल के दरमियान फैसला करने वाला कुरआन बना कर उतारा। और अगर आप भी उन की ख्वाहिशात का इत्तिबा करेंगे

مَا جَآءَكَ مِنَ الۡعِلۡمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ
इस के बाद के आप के पास इल्म आया तो आप को अल्लाह से कोई बचाने वाला और कोई

وَّلَا وَاقٍ ۝۳۷ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا رُسُلًا مِّنۡ قَبۡلِكَ وَجَعَلۡنَا ع ۱۱
मददगार नहीं होगा। यक़ीनन हम ने आप से पेहले पैग़म्बर भेजे और हम ने

لَهُمۡ اَزۡوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوۡلٍ
उन के लिए बीवियाँ और औलाद बनाईं। और किसी रसूल की ये ताक़त नहीं है के

اَنۡ يَّاۡتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝۳۸
वो कोई मोअजिज़ा ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से। हर मुक़र्ररा वक्त के लिए लिखी हुई तहरीर है।

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَ عِنْدَهٗۤ اُمُّ

और अल्लाह मिटाते हैं जिसे चाहते हैं और बाक़ी रखते हैं (जिसे चाहते हैं)। और अल्लाह ही के पास उम्मुल किताब

الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ

(यानी लौहे महफ़ूज़) है। और अगर हम आप को दिखा दें उस अज़ाब का कुछ हिस्सा

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا

जिस से हम उन्हें डरा रहे हैं या हम आप को वफात दे दें तो आप के ज़िम्मे तो सिर्फ पहोंचाना है और हमारे ज़िम्मे

الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا

हिसाब लेना है। क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम ज़मीन को उस के चारों तरफ से कम करते

مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ

हुए आ रहे हैं? और अल्लाह फैसला करता है, अल्लाह के फैसले को कोई पीछे नहीं कर सकता।

وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ

और वो तेज़ हिसाब लेने वाला है। यक़ीनन मक्र कर चुके वो जो

مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ

उन से पेहले थे, फिर अल्लाह के पास तमाम तदाबीर हैं। उसे मालूम है जो कोई जो कुछ

نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَيَقُوْلُ

करता है। और अनक़रीब कुफ्फार जान लेंगे किस के लिए आखिरत का घर है। और काफिर

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ

केहते हैं के आप भेजे हुए पैग़म्बर नहीं हो। आप फरमा दीजिए के अल्लाह मेरे

بَيْنِىْ وَ بَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ ع ١٢

और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है। और वो भी गवाह हैं जिन के पास किताब का इल्म है।

سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ (٧٢) (١٤) سूरह इब्राहीम मक्का में नाज़िल हुई

اٰيَاتُهَا ٥٢ उस में ५२ आयतें हैं

رُكُوْعَاتُهَا ٧ और ७ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ

अलिफ लाम रॉ। ये किताब है जिसे हम ने आप की तरफ उतारा है ताके आप इन्सानों को निकालें

اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ

तारीकियों से नूर की तरफ। उन के रब के हुक्म से ग़ालिब क़ाबिले तारीफ अल्लाह के रास्ते

الْحَمِيْدِ ۙ﴿١﴾ اللّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا

की तरफ। वो अल्लाह के जिस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो

فِى الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ﴿٢﴾

ज़मीन में हैं। और काफिरों के लिए सख्त अज़ाब से हलाकत है।

اِلَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ

उन के लिए जो दुन्या से महब्बत रखते हैं आखिरत के मुक़ाबले में

وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ

और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उस में कजी तलाश करते हैं।

اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ

ये (हक़ से बहोत ही) दूर वाली गुमराही में हैं। और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा

اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ

मगर उस की क़ौम की ज़बान दे कर ताके उन के सामने साफ साफ बयान करे। फिर अल्लाह जिसे चाहते हैं गुमराह करते हैं

وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤﴾ وَلَقَدْ

और जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं। और वो ग़ालिब है, हिक्मत वाला है। यक़ीनन

اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ

हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को भेजा अपने मोअजिज़ात दे कर के अपनी क़ौम को तारीकियों से नूर की तरफ

اِلَى النُّوْرِ ۙ وَ ذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ

निकालिए। और उन्हें अल्लाह की नेअमतें याद दिलाइए। यक़ीनन उस में हर सब्र करने

لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٥﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ

वाले, शुक्र करने वाले के लिए निशानियां हैं। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम से फरमाया के

اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ

तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है जब के अल्लाह ने तुम्हें नजात दी आले फिरऔन से

فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَ يُذَبِّحُوْنَ

जो तुम्हें बदतरीन अज़ाब से तकलीफ देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़बह

اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

करते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रेहने देते थे। और उस में तुम्हारे रब की तरफ से

مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝٦ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ ع ١

भारी इम्तिहान था। और जब तुम्हारे रब ने ऐलान किया के अगर तुम शुक्र करोगे

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝٧

तो मैं तुम्हें मज़ीद दूंगा और अगर तुम नाशुकरी करोगे तो यक़ीनन मेरा अज़ाब अलबत्ता सख्त है।

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमया के अगर तुम और वो जो ज़मीन में हैं सारे के सारे काफिर

جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٨ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا

बन जाओ, तो यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। क्या तुम्हारे पास उन लोगों की

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۛؕ

खबर नहीं आई जो तुम से पेहले थे क़ौमे नूह और क़ौमे आद और क़ौमे समूद

وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛؕ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

और वो जो उन के बाद हुए जिन को सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जानता।

جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ

जिन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर उन्हों ने अपने हाथ रख दिए

فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَ قَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا

अपने मुंह में और कहा यक़ीनन हम तो कुफ्र करते हैं उस के साथ जिस को दे कर तुम भेजे गए हो और यक़ीनन हम

لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝٩ قَالَتْ

अलबत्ता बहोत ज़्यादा शक में हैं उस की तरफ से जिस की तरफ तुम हमें दावत देते हो। उन के पैग़म्बरों

رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

ने कहा के क्या अल्लाह के बारे में शक जो आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है?

يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرَكُمْ

जो तुम्हें बुलाता है ताके वो तुम्हारी मग़फिरत करे तुम्हारे गुनाहों की और तुम्हें मोहलत दे

اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ

एक वक्ते मुक़र्ररा तक के लिए। उन्हों ने कहा के तुम नहीं हो मगर हम जैसे इन्सान।

تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا

तुम ये चाहते हो के हमें रोक दो उस से जिस की हमारे बाप दादा इबादत करते थे

فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ

तो तुम हमारे पास रोशन मोअजिज़ा ले आओ। उन से उन के पैग़म्बर ने कहा के हम तो

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ

सिर्फ़ तुम जैसे इन्सान हैं, लेकिन अल्लाह एहसान करता है जिस पर चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ

अपने बन्दों में से। और हमारी ताक़त नहीं है के हम तुम्हारे पास कोई मोअजिज़ा लाएं

اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١

मगर अल्लाह के हुक्म से। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए।

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ

और हमें क्या हुवा के हम अल्लाह पर तवक्कुल न करें हालांके उस ने हमें हमारे रास्तों की हिदायत दी।

وَ لَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

और अलबत्ता हम ज़रूर सब्र करेंगे उस पर जो तुम हमें ईज़ा दोगे। और अल्लाह ही पर तवक्कुल करने वालों को

الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝١٢ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ ع ١٤

तवक्कुल करना चाहिए। और काफिरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा के

لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ

हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपने मुल्क से या ये के तुम हमारे मज़हब में आ जाओ।

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٣

फिर उन के रब ने उन की तरफ वही की के हम इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक करेंगे।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ

और तुम्हें इस मुल्क में उन के बाद ज़रूर ठेहराएंगे। ये उस शख्स के लिए है जो मेरे सामने

مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ۝١٤ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ

खड़े होने से डरे और मेरे अज़ाब की वईद से डरे। और उन्हों ने फतह तलब की और हर ज़ालिम

جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝١٥ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَ يُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ

सरकश नाकाम हुवा। उस के आगे जहन्नम है और उसे पीप वाला पानी पीने को

صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ

दिया जाएगा। जिस को वो घूँट घूँट कर के पिएगा और उस को हलक़ से नीचे उतार नहीं सकेगा और उसे

الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ

मौत आ लेगी हर तरफ से हालांके वो मरने वाला नहीं है।

وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और उस के बाद भी सख्त अज़ाब होगा। उन लोगों का हाल जिन्हों ने अपने रब के साथ

بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ

कुफ्र किया उन के आमाल ऐसे हैं जैसा के राख, जिस को तूफानी हवा ने तेज़ उड़ाया हो

فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ

सख्त हवा वाले दिन में के वो अपने आमाल में से किसी चीज़ पर भी कादिर नहीं हैं।

ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ

ये (हक़ से बहोत) दूर वाली गुमराही है। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया। अगर वो चाहे तो तुम्हें हलाक कर दे

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

और नई मख़लूक़ को ले आए। ये अल्लाह पर कुछ मुशकिल

بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ

नहीं। और वो सारे के सारे इकट्ठे अल्लाह के सामने पेश होंगे, फिर जुअफा उन से कहेंगे जो

اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ

बड़ा बनना चाहते थे के यक़ीनन हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, फिर क्या तुम हमारे कुछ काम

عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا

आओगे अल्लाह के अज़ाब से? वो कहेंगे के अगर अल्लाह ने हमें हिदायत दी होती

اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا

तो हम तुम्हें हिदायत देते। हम पर बराबर है, चाहे हम फरयाद करें या हम सब्र करें,

مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٢١﴾ ع وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ ع ١٥

हमारे लिए किसी तरह छुटकारा नहीं है। और जब तमाम उमूर का फैसला कर दिया जाएगा तो शैतान

الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ وَعَدْتُّكُمْ

कहेगा के यक़ीनन अल्लाह ने तुम से वादा किया था सच्चा वादा और मैं ने भी तुम से वादा किया था,

فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ

फिर मैं ने तुम से वादाखिलाफी की। और मेरा तुम पर कोई ज़ोर नहीं था

اِلَّاۤ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَ لُوْمُوْۤا

सिवाए इस के के मैं ने तुम्हें दावत दी, फिर तुम ने मेरी दावत क़बूल कर ली। इस लिए तुम मुझे मलामत मत करो बल्के

اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ

अपने आप को मलामत करो। न मैं तुम्हारी फरयादरसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फरयाद को पहोंच सकते हो। यक़ीनन मैं

كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ

इन्कार करता हूँ शिर्क का जो तुम इस से पेहले मुझे शरीक ठेहराते रहे। यक़ीनन ज़ालिमों

لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾ وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। और वो लोग जो ईमान लाए और जो नेक काम

الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

करते रहे वो अपने रब के हुक्म से दाखिल किए जाएंगे ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे से नेहरें बेहती

فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾ اَلَمْ تَرَ

होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। उन का तहीय्या उस में अस्सलामु अलैकुम होगा। क्या आप ने देखा नहीं के

كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ

अल्लाह ने कैसे मिसाल बयान की पाकीज़ा कलिमे की पाकीज़ा दरख्त

طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿٢٤﴾

की तरह जिस की जड़ें मज़बूत हों और जिस की शाखें आसमान में हों।

تُؤْتِيْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ

जो हर वक्त अपने रब के हुक्म से अपना फल देता हो। और अल्लाह मिसालें बयान

الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَ مَثَلُ

करते हैं इन्सानों के लिए ताके वो नसीहत हासिल करें। और बुरे

كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ

कलिमे की मिसाल ऐसी है जैसा के बुरा दरख्त, जो ज़मीन के ऊपर ही

فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

से उखाड़ लिया गया हो जिस के लिए कोई क़रार न हो। अल्लाह ईमान वालों को

اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ

क़ौले साबित के ज़रिए दुन्यवी ज़िन्दगी में और आखिरत में जमाते हैं।

وَ يُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَ يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾ ع

और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करते हैं। और अल्लाह करते वही हैं जो वो चाहते हैं।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا

क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन्हों ने अल्लाह की नेअमत को कुफ्र से बदल दिया

وَّ اَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ؕ

और जिन्हों ने अपनी क़ौम को हलाकत के घर में उतारा। यानी जहन्नम में, जिस में वो दाखिल होंगे।

وَ بِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا

और वो बुरी ठेहेरने की जगह है। और उन्हों ने अल्लाह के लिए शरीक ठेहराए ताके वो अल्लाह के रास्ते से

عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ

गुमराह करें। आप फरमा दीजिए के तुम मज़े उड़ा लो, फिर यक़ीनन तुम्हारा लौटना जहन्नम की तरफ है। आप फरमा दीजिए

لِّعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ يُنْفِقُوْا

मेरे उन बन्दों से जो ईमान लाए के वो नमाज़ क़ाइम करें और खर्च करें

مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ

उन चीज़ों में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दी, चुपके और अलानिया, इस से पेहले के वो दिन

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ

आ जाए के जिस में न खरीद व फरोख्त और न दोस्ती होगी। अल्लाह ही है जिस ने आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ

और ज़मीन को पैदा किया और जिस ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस

بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ

के ज़रिए तुम्हारे खाने के लिए फल निकाले। और उस ने तुम्हारे लिए कशती को मुसख्खर किया

لِتَجْرِىَ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾ ۚ

ताके वो चले समन्दर में अल्लाह के हुक्म से। और उस ने तुम्हारे लिए नेहरों को भी काम में लगा रखा है।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ

और उस ने तुम्हारे लिए चाँद और सूरज को काम में लगा रखा है जो लगातार हरकत में हैं। और उस ने तुम्हारे

الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ﴿٣٣﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ

लिए रात और दिन को काम में लगा रखा है। और उस ने तुम्हें हर चीज़ में से दिया जिस का तुम ने उस से सवाल किया।

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ

और अगर तुम अल्लाह की नेअमत को शुमार करो तो उस को गिन नहीं सकते। यक़ीनन इन्सान बहोत ज़्यादा ज़ालिम

كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ ع ١٧

और बहोत ज़्यादा नाशुकरा है। और जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! इस शेहर को अमन वाला

اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَ بَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ رَبِّ

बनाइए और मुझे और मेरे बेटे को इस से बचाइए के हम बुतों की इबादत करें। ऐ मेरे रब!

اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ

यक़ीनन इन बुतों ने बहोत से इन्सानों को गुमराह किया। फिर जो मेरा इत्तिबा करे

فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾

तो वो मुझ से है। और जो मेरी नाफरमानी करे तो यक़ीनन आप बख़्शने वाले, निहायत रहम करने वाले हैं।

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ

ऐ हमारे रब! यक़ीनन मैं ने अपनी औलाद में से बाज़ को ऐसी वादी में जो खेती वाली नहीं

عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ

तेरे इज़्ज़त वाले घर के पास ठेहराया है, ऐ हमारे रब! इस लिए ताके वो नमाज़ क़ाइम करें, फिर

اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ

लोगों के दिलों को आप कर दीजिए के उन की तरफ माइल हों और उन्हें रोज़ी दीजिए

مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ

फलों की ताके वो शुक्र अदा करें। ऐ हमारे रब! यक़ीनन आप जानते हैं

مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ؕ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ

वो जिसे हम छुपाते हैं और जिसे हम ज़ाहिर करते हैं। और अल्लाह पर कोई चीज़ मख़्फी नहीं है

فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

न ज़मीन में और न आसमान में। तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने

وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّيْ

मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ दिए। यक़ीनन मेरा रब

لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ

अलबत्ता दुआ सुनने वाला है। ऐ मेरे रब! आप मुझे नमाज़ क़ाइम करने वाला बनाइए

وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ

और मेरी औलाद में से भी। ऐ हमारे रब! और मेरी दुआ को क़बूल कर लीजिए। ऐ हमारे रब! मेरी

وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ ع ١٨

और मेरे वालिदैन की और तमाम ईमान वालों की मग़फिरत कर दीजिए उस दिन जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا

और तुम अल्लाह को ग़ाफिल मत समझो उस से जो ये ज़ालिम लोग कर रहे हैं। अल्लाह तो सिर्फ

يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِيْنَ

उन्हें ढील दे रहा है ऐसे दिन के लिए जिस में निगाहें फटी रेह जाएंगी। वो तेज़ दौड़ रहे होंगे,

مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ

अपने सरों को ऊँचे किए हुवे होंगे, उन की तरफ उन की निगाह वापस नहीं लौटेगी। और उन के दिल

هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾ وَ اَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ

तमाम खयालात से खाली होंगे। और आप इन्सानों को डराइए उस दिन से जिस दिन वो अज़ाब आएगा

فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ

तो ज़ालिम लोग कहेंगे के ऐ हमारे रब! आप हमें मोहलत दीजिए क़रीबी वक्त तक

قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْۤا

के हम आप की दावत को क़बूल कर लें और रसूलों का इत्तिबा करें। क्या तुम ने इस से पेहले

اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾ وَّ سَكَنْتُمْ

क़स्में नहीं खाई थीं के तुम्हारे लिए ज़वाल नहीं है? हालांके तुम रहे थे

فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ تَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ

उन लोगों के मकानात में जिन्हों ने अपनी जानों पर जुल्म किया और तुम्हारे सामने वाज़ेह हो चुका था के हम ने

فَعَلْنَا بِهِمْ وَ ضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا

उन के साथ क्या किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें भी बयान की थीं। और उन्हों ने अपना

مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ

मक्र किया और अल्लाह के पास उन का मक्र है। और उन का मक्र ऐसा नहीं था के उस से

لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝٤٦ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ

पहाड़ (पहाड़ से मुराद शरीअत है) टल जाते। इस लिए आप अल्लाह को अपने रसूलों से किए हुए वादे

وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝٤٧ يَوْمَ

के खिलाफ करने वाला मत समझो। यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, इन्तिक़ाम लेने वाला है। उस दिन

تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَ بَرَزُوْا

ये ज़मीन इस के अलावा ज़मीन से बदल दी जाएगी और आसमान (दूसरे आसमान से बदल दिए जाएंगे) और तमाम

لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝٤٨ وَ تَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ

के तमाम ग़ालिब यकता अल्लाह के सामने पेश होंगे। और आप मुजरिमों को देखोगे उस दिन के

مُّقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ۝٤٩ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ

वो बेड़ियों में जकड़े हुए होंगे। उन का लिबास तारकोल का होगा।

وَّ تَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝٥٠ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ

और उन के चेहरों को आग ढांपे हुए होगी। ताके अल्लाह सज़ा दे हर

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٥١

शख़्स को उन आमाल की जो उस ने किए हैं। यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

ये आम ऐलान है इन्सानों के लिए और इस लिए ताके उन्हें उस से डराया जाए और ताके वो जान लें के वही

هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ لِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٥٢ ع

अल्लाह यकता माबूद है और ताके अक़्ल वाले नसीहत हासिल करें।

ع ١٩

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ (١٥) (٥٤)

اٰيَاتُهَا ٩٩ رُكُوْعَاتُهَا ٦

और ६ रूकूअ हैं सूरह हिज्र मक्का में नाज़िल हुई उस में ९९ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١

अलिफ लाम रॉ। ये साफ साफ बयान करने वाले क़ुरआन और इस किताब की आयतें हैं।